**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना मधुबनी**

**मो०न० 9546743796**

**Email –** **mishrasm966@gmail.com**

**B. A. III**

 **रसक भेद**

 **2 हास्य रस : -**

 **रूप , आकार , वाणी , वेश एवं कार्यमे विकृति हास्य रसक उत्पत्तिक मुख्य कारण अछि | साहित्य दर्पणकारक अनुसार –**

 **“ वागादिवैकृतैश्चेतोविकासो हास इष्यते | “**

1. **स्थायीभाव – हास |**

**विभाव - ( क ) आलंबन – अन्य व्यक्तिक विकृत वेश – भूषा , आकार – निर्लज्जता , रहस्य गर्भित वाक्य |**

1. **( ख ) उद्दीपन – हास्यजनक चेष्टा |**
2. **अनुभाव – अधर , नाक एवं गालक स्फुरण , व्यंग्यपूर्ण कथन , अश्रुपात आदि |**
3. **व्यभिचारी भाव – श्रम , आलस्य , निन्द्रा अवहित्थादि |**
4. **गुण – प्रसाद |**
5. **वृत्ति – कोमला |**
6. **रीति – पांचाली |**
7. **सहचर रस – संयोग श्रृंगार , अद्भुत , वीर , शांत , वीभत्स , रौद्र |**

**विरोधी रस – भयानक , करुण |**

**3 करुण रस :-**

 **इष्टक नाश तथा अनिष्टक प्राप्तिक कारणें करुण रसक उत्पत्ति होइत अछि –**

 **“ इष्टनाशादनिष्टाप्तौं शोकात्मा करुणो रस: | “**

**एहि ठाम अनिष्ट प्राप्तिक अर्थ ई नहि अछि जे इष्ट व्यक्ति वा वस्तुक सर्वथा नाश भए जाए अथवा मात्र इष्ट वस्तु वा व्यक्तिएक अनिष्ट होअए | करुण स्वनिष्ठ एवं परनिष्ठ दुनू भए सकैत अछि | अनिष्टक प्राप्तिमे शाप , बंधन , क्लेश , अर्थहानि आदि किछु भए सकैछ |**

1. **स्थायी भाव - शोक |**

**विभाव – ( क ) आलंबन – विनष्ट बन्धु , पराभावादिक भुक्तभोगी |**

1. **( ख ) उद्दीपन – प्रिय व्यक्ति वा वस्तुक गुण स्मरण , चित्र दर्शन , मृतक – वाह आदि |**
2. **अनुभाव – रुदन , उच्छ्वास , प्रलाप , भूमि पतन , मूर्च्छा , वैवर्ण , कम्प , दैव – निन्दा आदि |**
3. **संचारिभाव – निर्वेद , ग्लानि , मोह , स्मृति , चिन्ता , विषाद , उन्माद , दैन्य , व्याधि , अश्रु, अपस्मार आदि |**
4. **गुण – माधुर्य |**
5. **रीति – वैदर्भी |**
6. **वृत्ति – उपनागरिका**
7. **सहचर रस – रौद्र**
8. **, भयानक , शान्त , अद्भुत , वीर , वीभत्स वात्सल्य |**

**विरोधी रस – हास्य एवं श्रृंगार रस |**

**4 रौद्र रस : -**

**क्रोधक पूर्ण रूपसँ प्रस्फुटित होयबे रौद्र रस अछि | शत्रुक अपमानजनित चेष्टा , देश , कुल , जाति , विद्या , कर्म आदिक निन्दा , मानभंग एवं अपकार आदिक कारणें रौद्र रसक उदय होइछ |**

1. **स्थायीभाव – क्रोध |**
2. **विभाव – ( क ) आलम्बन – शत्रु , अवस्कंदन , अपराधी एवं दुर्जनादि |**

**( ख ) उद्दीपन - आक्रमण , संधि – विच्छेद , अवस्कंदन , कटुक्ति , अपराध , शत्रु सैन्यवृद्धि आदि |**

1. **अनुभाव – मुख एवं नेत्रक लाल भए जाएब , दांत पीसब , भृकुटिक चढब आदि |**
2. **संचारीभाव – मद , तर्क , वितर्क , अमर्ष , स्मृति , उद्वेग , असूया आदि |**
3. **गुण – ओज |**
4. **रीति – गौड़ि |**
5. **वृत्ति – परुषा |**
6. **सहचर रस – वीर , वीभत्स , वात्सल्य , शान्ति , अद्भुत एवं करुण |**

**विरोधी रस – श्रृंगार , हास्य , भयानक |**

**5 वीर रस : -**

**युद्ध , दया एवं दान आदि कार्य कें अत्यधिक उत्साहक संग कएल गेलापर वीर रसक उत्पत्ति होइछ |**

1. **स्थायीभाव – उत्साह |**
2. **विभाव - ( क ) आलम्बन – नायक , शत्रु , याचक , दीन , तीर्थ स्थान आदि |**

**( ख ) उद्दीपन – शत्रुक चेष्टा , युद्धजनित कोलाहल , क्रंदन , शंखनाद आदि |**

 **Iii अनुभाव – उत्साहपूर्ण वाणी , आक्रमण हेतु प्राप्त चापल्य , रोमांचादि |**

 **Iv संचारीभाव – धृति , मति , गर्व , स्मृति , हर्ष , असूया , आवेग आदि |**

 **V गुण - ओज , प्रसाद |**

 **Vi वृत्ति – पुरुषा एवं कोमला |**

 **Vii रीति – गौड़ी , पांचाली एवं लाटी |**

 **Viii सहचर रस – हास्य , अद्भुत , करुण , वीभत्स एवं रौद्र |**

 **Ix विरोधी रस – श्रृंगार , शांत एवं वात्सल्य |**